सुखकर्ता दुःखहर्ता (गणपतीची आरती)

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

सुखकर्ता दुःखहर्ता (गणपतीची आरती)

प्रकार	आरती
देवता	श्री गणेश
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	श्रीराम उपासना ग्रंथ — गणेश बाबाजी फडके तासगांवकर, तासगांव, 1910 — scan page 45 (printed p. 39), Marathi Wikisource revision 192392
आभार	पाठ: श्रीराम उपासना ग्रंथ (1910), मराठी विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain (Samarth Ramdas, 17th century). Transcription from Marathi Wikisource, CC BY-SA 4.0.

जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ती ।

jayadev jayadev jay maṃgalamūrtī |

दर्शन मात्रे मन कामना पुरती ॥ ध्रु० ॥

darśan mātre man kāmanā puratī || dhru0 ||

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नांची ।

sukhakartā duḥkhahartā vārtā vighnāṃcī |

नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची ।

nuravī puravī prem kṛpā jayācī |

सर्वांगी सुंदर उटि शेंदुराची ।

sarvāṃgī suṃdar uṭi śeṃdurācī |

कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची ॥ जयदेव० ॥ १ ॥

kaṃṭhī jhaḷake māḷ muktāphaḷāṃcī || jayadeva0 || 1 ||

रत्नखचित करा तुज गौरीकुमरा ॥

ratnakhacit karā tuj gaurīkumarā ||

चंदनाची उटी कुंकुम केशरा ।

caṃdanācī uṭī kuṃkum keśarā |

हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा ।

hirejaḍit mukuṭ śobhato barā |

रुणझुणती नूपुरे चरणीं घागरिया ॥ जयदेव ॥ २ ॥

ruṇajhuṇatī nūpure caraṇīṃ ghāgariyā || jayadev || 2 ||

लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना ।

laṃbodar pītāṃbar phaṇivarabaṃdhanā |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

सरळ सोंड वक्रतुंड त्रीनयना ।

saraḷ soṃḍ vakratuṃḍ trīnayanā |

दास रामाचा वाट पाहे सदना ।

dās rāmācā vāṭ pāhe sadanā |

संकटीं पावावें निर्वाणी रक्षावें सुरवरवंदना ॥ जयदेव० ॥ ३ ॥

saṃkaṭīṃ pāvāveṃ nirvāṇī rakṣāveṃ suravaravaṃdanā || jayadeva0 || 3 ||

अर्थ

ध्रुवपद में मंगलमूर्ति गणेश की जय है, जिनके दर्शन मात्र से मन की कामना पूरी होती है। चरणों में उन्हें सुख देने वाला, दुःख हरने वाला और विघ्नों की चर्चा तक मिटाने वाला कहा गया है; सिंदूर का लेप, मोतियों की माला, रत्नजड़ित कंगन, चंदन-केसर, हीरों का मुकुट और रुनझुन करते नूपुर; लंबोदर, पीतांबरधारी, सर्प की करधनी वाले वक्रतुंड त्रिनेत्र। रामदास उनके द्वार पर राह देखते हैं और संकट तथा अंतिम समय में रक्षा माँगते हैं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।